PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 4, ISSUE 5

सुभद्राकुमारी चौहान की कविता में राष्ट्र-भावना

डॉ. भरत पटेल
हिन्दी विभाग
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज,
विजयनगर, जि. साबरकांठा
गुजरात, भारत |

छायावादोत्तर राष्ट्रीय कविता-धारा में सुभद्राकुमारी चौहान का नाम विशेष उल्लेखनीय है | युग-चेता साहित्यकार अपने युग की समस्याओं को साहित्य में प्रतिबिम्बित करता है | बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से देश में अँग्रेजी साम्राज्यवाद के शोषण और आतंक का विरोध शुरू हो चुका था | इस जन-आक्रोश को महात्मा गाँधी के नेतृत्व में शुरू हुए स्वतंत्रता-संग्राम ने जोश दिया | इस समय के कवियों ने एक ओर भारतीय संस्कृति का यशगान किया तो दूसरी ओर देश को स्वतंत्रता दिलाने की मुहिम शुरू की | माखनलाल चतुर्वेदी , बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' , रामनरेश त्रिपाठी , सुभद्राकुमारी चौहान जैसे अनेक कवियों ने जन-समुदाय में राष्ट्र-भावना को जागृत करने का भरसक प्रयत्न किया | डॉ. दयानन्द शर्मा ने सुभद्राकुमारी चौहान के संदर्भ में लिखा है – " वास्तव में सुभद्राकुमारी चौहान अपने युग की अत्यंत जागरूक कवयित्री हैं .... अत: समय की गतिविधि के अनुसार सुभद्रा जी का आकुल-हृदय देश की परतंत्रता के कारण उसकी दुर्दशा पर क्रंदन कर उठा | देश की मुक्ति के आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के साथ-साथ देश-प्रेम के भावों को उन्हों ने अपने ओजस्वी स्वर में अभिव्यक्ति भी दी है |" [१]

' झाँसी की रानी ' कविता से सुभद्रा जी को खूब प्रसिद्धि प्राप्त हुई | सन १८५७ में अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति के विरुद्ध हुआ विप्लव भले ही असफल हुआ हो , लेकिन भारतीय जनमानस में एक चिनगारी का काम कर दिया | उस विप्लव में अंग्रेजों की खालसा-नीति के विरुद्ध हुए भयंकर युद्ध में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के अप्रतिम साहस का इतिहास साक्षी है | सुभद्रा जी ने लक्ष्मीबाई की अदम्य साहस और वीरता को प्रस्तुत कविता में जीवंत कर दिखाया है –

" सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी ,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी ,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी ,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी |
चमक उठी सन सत्तावन में , वह तलवार पुरानी थी ,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी ,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी | " [२]

कवयित्री ने जनता जनार्दन में स्वतन्त्रता के प्रति नवीन जोश , अदम्य उत्साह और उत्कट राष्ट्र-भावना को जागृत करने के लिए लक्ष्मीबाई की वीरता की गाथा को ओजस्वी स्वर में जीवंत कर दिखाया है |

अंग्रेजों द्वारा भारतीय प्रजा को लूटने के नये-नये कानून बनाए जाते थे , नये-नये कर (टेक्स) डाले जाते थे | दमनकारी रोलेट एक्ट का विरोध करने के लिए पंजाब के जलियावाले बाग में लगभग पाँच हजार स्त्री-पुरुष और बच्चे-बूढ़े एकत्रित हुए थे | तत्कालीन जनरल डायर ने इस निर्दोष जनसमूह पर फायर करने का आदेश दे दिया था , जिसमें लगभग एक हजार बच्चे , स्त्री , पुरुष और बूढ़े लोगों की जानें गई थी | १३ अप्रैल , १९१९ का यह दिन अंग्रेजों की निर्ममता , अत्याचार और जनसंहार के कारण

काला दिन बन गया था | उस दिन शहीद हुए उन बालकों , युवानों और वृद्धों के चीत्कार को इस प्रकार श्रद्धांजलि दी है –

" ओ प्रिय ऋतुराज ! किन्तु धीरे से आना ,
यह है शोक-स्थान , यहाँ मत शोर मचाना |
कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा कर
कलियाँ उनके लिए , गिराना थोड़ी लाकर
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं ,
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं |
कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना ,
करके उनकी याद अश्रु के ओस बहाना |
तड़प-तड़प के वृद्ध मरे हैं गोली खा कर ,
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर | " [३]

यहाँ व्यथित हृदय कवयित्री ऋतुराज वसन्त से अनुरोध करती है कि तुम उन शहीदों के समाधि-स्थान पर कलियाँ , पुष्प चढ़ाना और ओस रूपी अश्रु बहाना |

कवयित्री हर हाल में अपने देश को स्वतंत्र देखना चाहती है | उनकी उत्कट राष्ट्र-भावना ' विजयादशमी ' नामक कविता में इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है –

" रामचन्द्र की विजय-कथा का भेद बता आदर्श सखी !
पराधीनता से छूटे यह प्यारा भारतवर्ष सखी ! " [४]

श्री राम के लंका-विजय के उपलक्ष्य में मनाये जानेवाले उत्सव विजयादशमी से प्रेरणा प्राप्त करते हुए राष्ट्र को स्वतंत्र करने का आह्वान किया है –

" दो विजये ! वह आत्मिक बल दो , वह हुंकार मचाने दो |

अपनी निर्बल आवाजों से , दुनिया को दहलाने दो |
जय स्वतंत्रिणी भारत माँ ! यों कहकर मुकुट लगाने दो |
हमें नहीं , इस भूमण्डल को , माँ पर बलि-बलि जाने दो | " [५]

गाँधी जी के नेतृत्व में स्वाधीनता-आंदोलन का प्रारम्भ ज़ोर-शोर से हुआ | अनेक कवियों ने गाँधी जी के चरित्र को साहित्य के माध्यम से राष्ट्र-स्तर और विश्व-स्तर तक उठाने का स्तुत्य प्रयत्न किया है –

" कलियुग आया , जाते-जाते उसके सी का युग आया ,
गाँधी की महिमा फैल गयी , जग ने गाँधी का गुण गाया |
कवि गद्-गद् हो अपनी-अपनी श्रद्धांजलियाँ भर-भर लाये ,
रोमा रोला रवि ठाकुर ने उल्लसित गीत यश के गाये | " [६]

सुभद्रा जी ने असहयोग के आंदोलन को सशक्त बनाने एवं कवि-लेखकों को राष्ट्र-प्रेम के गान तथा क्रान्तिकारी वीरों की गाथा लिखने का आह्वान किया है | ' वे कुंजें ' नामक कविता में कवयित्री का ओजपूर्ण स्वर गूँज उठा है –

" विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र , पाप से असहयोग लें ठान |
गुंजा डाले स्वराज्य की तान और सब हो जावे बलिदान |
जरा ये लेखनियाँ उठ पड़ें , मातृभूमि को गौरव से मढ़ें |
करोड़ों क्रांतिकारिणी मूर्ति , पलों में निर्भयता से गढ़ें | " [७]

स्वाधीनता-आंदोलन में प्रत्येक भारतवासी को एकसूत्र में पिरोने का गौरव हिन्दी भाषा को प्राप्त हुआ | इस गौरवशाली भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने की अभिलाषा सुभद्रा जी ने कुछ इस अंदाज में अभिव्यक्त की है –

" मुझ-सी एक एक की बन तू , तीस कोटि की आज हुई |
हुई महान सभी भाषाओं की तू ही सरताज हुई |
तू होगी आधार देश की पार्लामेण्ट बन जाने में |
तू होगी सुख-सार , देश के उजड़े क्षेत्र बसने में |
तू होगी व्यवहार ,देश के बिछड़े हृदय मिलने में |
तू होगी अधिकार , देशभर को स्वातंत्र्य दिलाने में | " [८]

हजारों स्वातंत्र्य-सेनानी लाठी-चार्ज , कोड़ों की मार और जेल की कड़ी यातनाएँ भुगतते थे | सुभद्रा जी स्वयं जेल गई थी | पर इससे आज़ादी जज्बा और ज्यादा मजबूत हो गया था | ' सेनानी का स्वागत ' नामक कविता में कवयित्री के जज़्बात इस कदर पेश हुए हैं –

" गोली लाठी-चार्ज जेल की ये भीषण दीवारें ,
काल-कोठरी , दण्ड-यातना , वे कोड़ों की मारें |
प्रभुता-मद से भरी शत्रु की व्यंग्य भरी बौछारें ,
साक्षी है साहस की , फिर हम जीते या हारें |
हैं संतप्त तदपि आशा से स्वागत आज तुम्हारा ,
एक बार फिर कह दो ,झण्डा ऊँचा रहे हमारा | " [९]

वर्षों की गुलामी के पश्चात , अनेकविध यातनाओं और बलिदानों के बाद जब हमारा भारत देश आजाद होता है , तब हर हिंदुस्तानी हर्ष , गर्व और गौरव का अनुभव करता है | सुभद्रा जी स्वतंत्र भारत का स्वागत कुछ इस शब्दों में करती हैं –

" आ स्वतंत्र प्यारे स्वदेश आ , स्वागत करती हूँ तेरा |
तुझे देखकर आज हो रहा , दूना प्रमुदित मन मेरा |

आ , उस बालक के समान , जो है गुरुता का अधिकारी |
आ , उस युवक-वीर सा जिसको विपदाएँ ही हैं प्यारी | " [१०]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि सुभद्राकुमारी चौहान की कविता उत्कट राष्ट्र-भावना से आकण्ठ सराबोर है | उन्हों ने तत्युगीन भारत में चल रही स्वाधीनता-संग्राम की गतिविधियों को मार्मिक और ओजस्वी ढंग से अभिव्यक्ति दी है | वे स्वयं कारावास भोग चुकी थी , अत: उनकी कविता में अनुभूति की सच्चाई झलकती है | उनकी कविता की भाषा प्रसाद गुण से युक्त है |

संदर्भ-संकेत :

१. आधुनिक कवि और उनका काव्य , पृष्ठ- १३५
२. झाँसी की रानी , website-hindisamay.com
३. जलियावाले बाग में बसन्त, website-hindisamay.com
४. विजयादशमी , website-hindisamay.com
५. वही , website-hindisamay.com
६. लोहे को पानी कर देना , website-hindisamay.com
७. वे कुंजें , website-hindisamay.com
८. मातृ-मन्दिर में , website-hindisamay.com
९. सेनानी का स्वागत , website-hindisamay.com
१०. स्वदेश के प्रति , website-hindisamay.com